नयी शिक्षा नीति 2020 – संस्कृत भाषा

डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी

प्राचार्य
श्री गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय
सुजानगंज जौनपुर

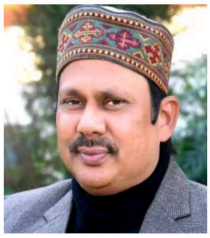

संस्कृत भाषा संवर्धन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

ज्ञान विज्ञान से समृद्ध अति प्राचीन भाषा संस्कृत का स्थान भारतवर्ष में अति प्राचीन है। राजनीतिक, कूटनीति, धर्मशास्त्र, न्याय शास्त्र, आयुर्वेद, शल्य चिकित्सा, साहित्य आदि सभी शास्त्रों की जननी संस्कृत है। संस्कृत ही संपूर्ण विश्व को सुसंस्कृत करने की सामर्थ्य रखने वाली भाषा है। संस्कृत कई हजार वर्षों से प्रारंभ होकर आज भी अपनी गरिमा को बनाए रखने में सामर्थ्यवान भाषा बनी हुई है। जो देववाणी कही जाती है। भारत प्राचीन साहित्य, योग, आयुर्वेद, दर्शन, आदि सभी से समृद्ध है। भारत की इस सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार देश की उच्चतर प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि यह देश की पहचान के साथ–साथ भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।

संस्कृत ऐसी भाषा है जो प्रकृति को आत्मसात् कर चलती है। मानव मात्र के कल्याण की बात करती है। हमें सुसंस्कृत कर संगठित करने की बात करती है। जाति– धर्म से उठकर मानवता के गीत गाती है। विभिन्नता में एकता की लहर बहाती है। व्यवहार से अध्यात्म का पाठ पढ़ती है। जो मनुष्य को अविरल एवं निर्मल बनती है। ऐसी भाषाओं का संवर्धन एवं विस्तार करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

शिक्षा के उन्नयन के लिए भारत सरकार द्वारा समय–समय पर शिक्षा नीतियों का निर्माण किया जाता है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया गया। यह शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है। जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा संस्कृति एवं विरासत के आधार पर सृजित की गई है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के परिपेक्ष्य में नियोजित है।

प्राचीन भारत में शिक्षा लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञानार्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्वस्तरीय संस्थाओं ने अध्ययन

के विविध क्षेत्रों में शिक्षक और शोध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देश से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि, माधव, पाणिनि, पतंजलि, गौतम, नागार्जुन, पिंगला, शुकदेव, मैत्रेयी, गार्गी जैसे अनेकों महान विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रों जैसे गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, और शल्य चिकित्सा, सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, वास्तु शास्त्र नौकायन निर्माण और दिशा ज्ञान, योग, ललित कला, शतरंज, इत्यादि में प्रामाणिक योगदान दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है। जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा संस्कृति एवं विरासत के आधार पर सृजित की गई है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के परिपेक्ष्य में नियोजित है।

प्राथमिक शिक्षा जिसमें सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा कक्षा एक से कक्षा आठ तक संस्कृत भाषा को अनिवार्य किया गया है। क्योंकि प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में भारतीय संस्कृति सभ्यता की ज्ञान के साथ संस्कार का भी बीजारोपण हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)–2020 संस्कृत और संस्कृति को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसलिए संस्कृत और भारतीय भाषाओं का शिक्षा में महत्व बढ़ गया है। भारतवर्ष में जन्म लेते ही हम में एक अलग आत्मविश्वास जाग जाता है। उसका मूल कारण भारतीय संस्कृति है और उस संस्कृति की जड़ में संस्कृत ही है। चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया तो उसने एक दशक तक रहकर यहां के ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन किया। लगभग छह हजार ग्रंथों को भारत

से अपने देश ले गया। उनमें से अधिकतर ग्रंथ संस्कृत में ही रहे होंगे। चूंकि वेद सबसे प्राचीन ग्रंथ है। इसलिए संस्कृत को दुनिया की पहली भाषा कहने के लिए किसी तर्क–वितर्क की जरूरत नहीं है। संस्कृत को सिर्फ़ रोज़गार से ही नहीं जोड़ा जाना चाहिए, बल्कि संस्कृत के माध्यम से वर्तमान और भविष्य की संस्कृति कैसे सुरक्षित रखी जाए यह भी बहुत बड़ा प्रश्न है। इसलिए संस्कृत के अध्ययन–अध्यापन की विशेष आवश्यकता है। नासा ने इस बात को स्वीकार किया है कि आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस तकनीक संस्कृत भाषा को बहुत नजदीक से समझती है। यही कारण है कि संस्कृत भविष्य की भाषा है। संस्कृत के उच्चारण से मस्तिष्क की गुणवत्ता और बढ़ जाती है। इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया गया। संस्कृत शिक्षा के विषय में यदि हम बात करें तो तीन स्तर पर विभाजित कर विषय वस्तु को रखा जा सकता है। पहले प्राथमिक शिक्षा जिसमें सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा कक्षा एक से कक्षा आठ तक संस्कृत भाषा को अनिवार्य किया गया है। क्योंकि प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में भारतीय संस्कृति सभ्यता की ज्ञान के साथ संस्कार का भी बीजारोपण हो सके। नैतिकता जैसे विषयों का ज्ञान होना अत्यधिक आवश्यक है। पुनः दूसरे क्रम में माध्यमिक शिक्षा

के विषय में तीन भाषाओं का अध्यापन करना अनिवार्य किया गया है। जिसमें एक संस्कृत भाषा भी रहेगी। इंटरमीडिएट स्तर पर दो भारतीय भाषाओं का चयन अनिवार्य किया गया है। तीसरे क्रम में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को और मजबूत करने के लिए शोध पर अत्यधिक बल देने के लिए अनेक संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों के साथ–साथ संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना करना मुख्य उद्देश्य है। जिन संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा का अध्यापन कराया जा रहा है उनमें अन्य भारतीय आधुनिक विषयों को भी लागू किया गया है। जिससे संस्कृत शिक्षा के साथ–साथ अन्य विषयों का ज्ञान भी बच्चों को प्राप्त हो सके। जो छात्र संस्कृत विषय नहीं लिए हैं उनके लिए भी अनेक विश्वविद्यालयों में अध्यापन हेतु स्वतंत्रता प्रदान की गई है। जिससे संस्कृ त भाषा का विकास एवं प्रचार दोनों संभव हो सके। अन्य विद्यालयों, विश्वविद्यालय में भी त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से संस्कृत का प्रसार किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षकों के लिए व्यवसायिक विकास अनिवार्य रूप से किया गया है। शिक्षा नीति के तहत प्रारंभिक शिक्षा का स्कूली पाठ्यक्रम 5+3+3+4 के आधार पर निर्धारित हुआ है।

प्रथम चरण– जिसे 5 वर्ष के लिए किया गया है। जो प्रारंभिक शिक्षा का चरण है। जिसे फाउंडेशन स्टेज करते हैं। जिसमें तीन से 8 वर्ष तक के बच्चे शामिल होंगे। जिसमें 3 साल की प्री स्कूल शिक्षा तथा 2 साल की स्कूली शिक्षा (कक्षा एक एवं दो) शामिल है। फाउंडेशन स्टेज के अंतर्गत भाषा कौशल और शिक्षक के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

द्वितीय चरण– प्रिप्रेटरी स्टेज यह 3 वर्ष का है। जिसमें मूलतः कक्षा 3 से 5 तक की कक्षाओं की शिक्षा प्रदान की जाएगी। इसमें 8 साल से लेकर 11 साल तक के बच्चे शामिल होंगे। इस स्टेज के बच्चों को भाषा और संख्यात्मक कौशल में विकास करना शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य है। इस स्टेज में बच्चों को क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा।

तृतीय चरण– मिडिल स्टेज में तीन अर्थात् 6 7 8 की कक्षाओं का समावेश किया गया है। कक्षा 6 से ही बच्चों को कोडिंग सिखाई जाएगी और उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ–साथ इंटर्नशिप भी प्रदान की जाएगी।

चतुर्थ चरण– इसमें सेकेंडरी स्टेज को रखा गया है। अर्थात् 9 10 11 12 की कक्षाओं का समावेश किया गया है। जिसमें तीन भाषाओं के साथ ही साथ सभी विषयों को पढ़ने की स्वतंत्रता रहेगी।

उच्च शिक्षा – स्नातक कोर्स तीन या चार वर्ष के है। जिसमें कई सारे एग्जिट ऑप्शन है। जो की उचित सर्टिफिकेट के साथ होगा। जो छात्र एक साल स्नातक कोर्स में पढ़ाई की है तो उसे सर्टिफिकेट दिया जाएगा। दो वर्ष के बाद एडवांस डिप्लोमा दिया जाएगा। तीन वर्ष के बाद डिग्री दी जाएगी और 4 वर्ष के बाद रिसर्च में प्रवेश के साथ बैचलर की डिग्री दी जाएगी।गठ

एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट का गठन किया गया है। जिसमें छात्रों द्वारा अर्जित किए गए डिजिटल एकैडमी क्रेडिट को विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से संग्रहित किया जाएगा और इसे अंतिम डिग्री के लिए स्थानांतरित किया जाएगा। इस दौरान छात्र किसी भी महाविद्यालय में अध्ययन कर अपने क्रेडिट को इकट्ठा कर सकता है । महाविद्यालयों के अलावा भी बहुत से प्लेटफार्म ऐसे भी निर्मित किए गए हैं जिस पर छात्र अध्ययन कर क्रेडिट अर्जित कर सकता है। छात्रों को तीन भाषाओं को सिखाया जाएगा जिसमें अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश किया गया है।

व्यावसायिक शिक्षा– सभी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा उच्च शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग होगी। एकल तकनीकी, स्वास्थ्य विज्ञान, विधि और कृषि विश्वविद्यालय अथवा अन्य–विषयों के विश्वविद्यालय, बहु–विषयक संस्थान बनने का लक्ष्य रखेंगे। वोकेशनल शिक्षा समस्त प्रकार की शिक्षा का एक अभिन्न अंग होगी। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य वर्ष 2025 तक 50 फीसद छात्रों कोवोकेशनल शिक्षा प्रदान करना है। संस्कृत भाषा के उत्थान एवं प्रचार प्रसार के लिए उसको भी व्यावसायिक शिक्षा के रूप में प्रस्तुत करना मुख्य उद्देश्य है ज्योतिष, कर्मकांड, वास्तु शास्त्र, एवं अन्य सभी विषयों को व्यवसायिक कर रोजगार के लिए एवं ज्ञान भंडार की वृद्धि के लिए कार्य किया जाना है।

इंटीग्रेटेड कोर्स पर भी प्रचुरता से बल दिया गया है। इसी के साथ मल्टीडिस्प्लेनरी कोर्स पर भी बल दिया गया है। यह सभी व्यवस्थाएं अन्य विश्वविद्यालयों के साथ संस्कृत विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को भी तथा संस्कृत माध्यमिक विद्यालयों को प्रदान की गई है। एनईपी में यह प्रावधान है कि 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थान (HEI) बहुविषयक संस्थान बनने का लक्ष्य रखेंगे, जिनमें से प्रत्येक में 3,000 या उससे अधिक छात्र होंगे। 2030 तक, हर जिले में या उसके आस–पास कम से कम एक बड़ा बहुविषयक संस्थान होगा। इसका उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 26.3% से बढ़ाकर 2035 तक 50% करना होगा। एकल–धारा उच्च शिक्षा संस्थानों को समय के साथ समाप्त कर दिया जाएगा, और सभी बहुविषयक बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। श्संबद्ध कॉलेजोंश की प्रणाली को 15 वर्षों में धीरे–धीरे समाप्त कर दिया जाएगा।

वस्तुतरू इन सब तत्वों का क्रियान्वयन हो पाना अभी पूर्णरूपेण संभव नहीं है क्योंकि बहुत से ऐसे संस्कृत विद्यालय हैं जहां पर भवन ही पूर्ण व्यवस्थित नहीं है। अध्यापकों एवं संसाधन की कमी है। फिर भी सरकार के द्वारा इन पर पूरा ध्यान केंद्रित कर उनको व्यवस्थित करने का कार्य संचालित है। आने वाले समय में निश्चित ही भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा। यही पूरे भारत की परिकल्पना है। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य एवं लक्ष्य है।